जापान रवाना होने से पहले
प्रधानमंत्री का वक्तव्य

नई दिल्ली
13 दिसम्बर, 2006

मैं प्रधानमंत्री श्री शिंजो आबे के आमंत्रण पर 14 से 16 दिसम्बर तक जापान की राजकीय यात्रा पर टोक्यो के लिए रवाना हो रहा हूं। मैं अपनी इस यात्रा को भारत की विदेश नीति का पूर्व की ओर रूझान का एक हिस्सा मानता हूं और सुदूर पूर्व एशियाई क्षेत्र के देशों के साथ और ज्यादा संपर्क की तलाश समझता हूं।

उभरते क्षेत्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय माहौल में भारत और जापान के दीर्घकालिक राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक हित तेजी से परस्पर समाहित होते जा रहे हैं।

आज हमारे द्विपक्षीय रिश्ते एक नये तथा जीवंत चरण में प्रवेश करने के लिए तैयार हैं। दोनों देश द्विपक्षीय रिश्तों को बढ़ाने की सांझी इच्छा रखते हैं। वैश्विक साझीदारी में परस्पर सामरिक नजरिए को मजबूत बनाने, व्यापक आर्थिक सहयोग की दिशा में आगे बढ़ने और सुरक्षा तथा आतंकवाद, ऊर्जा, परिवहन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं संस्कृति सहित रिश्तों की समग्रता के साथ परस्पर फायदेमंद सहयोग बढ़ाने के तौर-तरीकों के बारे में मुझे प्रधानमंत्री श्री आबे के साथ विचार-विमर्श का अवसर मिलेगा।

जापान यात्रा के दौरान, मुझे जापान के महामहिम सम्राट और साम्राज्ञी से भेंट करने का भी सम्मान मिलेगा। मैं जापान की संसद के संयुक्त सत्र को सम्बोधित करूंगा। अपने सम्बोधन में मैं जापान के साथ नजदीकी रिश्ते कायम करने की भारत की इच्छा को दृढ़ता से व्यक्त करूंगा। मैं जापान में भारत महोत्सव का उद्घाटन भी करूंगा और जापान के वरिष्ठ कारोबारी नेताओं के साथ विचार-विमर्श में शिरकत करूंगा।

मुझे आशा है कि मेरी इस यात्रा से भारत और जापान के रिश्ते गुणात्मक रूप से नई ऊंचाइयों पर पहुंचेंगे।

******